

Tilka Manjhi was amongst the first freedom fighters who fought against the oppressive rule of the British in India. He led a five-year uprising against the British and without doubt he should be considered as one of the precursors of the national liberation movement which gathered momentum under the leadership of Mahatma Gandhi. Tilka Manjhi was perhaps amongst the first martyrs of the freedom struggle -- he was hanged by the British in Bhagalpur in 1785.

We are today constantly seized with a blaze of eulogy of many leaders including some who hold high offices. A number of schemes, iconic buildings, airports, etc., are named after such leaders. Yet there is no recognition to this great Santhal leader who made the ultimate sacrifice for the fruits of freedom and democracy that we pride ourselves today. To give due recognition to the first freedom fighter of India, I would urge the following to be considered as a token tribute to this great tribal revolutionary :

- (a) Examine and consider declaring him as the first martyr of India's freedom struggle.
- (b) Department of School Education and Literacy should introduce in the NCERT books a section dealing with contribution to freedom struggle by early leaders like Tilka Manjhi.

Demand to provide electricity and loans to the farmers at cheaper rates and other infrastructural facilities

चौधरी मुन्जवर सलीम (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदय, मैं हिन्दुस्तान की उस सबसे बड़ी आबादी की दर्दनाक दास्तान की तरफ इस महान सदन का ध्यान आर्किपित करना चाहता हूं, जो आबादी अन्वाता के नाम से जानी जाती है। यह वह किसान है जो उस तपती धूप में खेत की मेड़ पर खड़ा होता है, जिस धूप में निकलने भर से अमीर लोगों के चेहरे झुलस जाया करते हैं। मैं उस किसान का दर्द बयान करने लिए आज इस महान सदन में खड़ा हुआ हूं, जो कड़के की ठंड में पानी और कीचड़ में खड़ा होकर तमाम देशवासियों के लिए अन्न पैदा करता है। जब गेहूं की सुनहरी बाली खेत को सुनहरा करती है, तब इस किसान के मुरझाये हुए चेहरे पर चमक आ जाती है। किसान इस फसल से आस बांध लेता है, लेकिन उसकी यह आस सरकारों की बेरुखी और नजरअन्दाजी से टूटकर बिखर जाती है।

उपसभापति महोदय, सरकारों का किसानों से बेरुखी का आलम यह है कि मीडिया में आई जानकारी के अनुसार सरकार की ही संस्था एफ.सी.आई. का मानना है कि पिछले 5 सालों में 1,94,502 मीट्रिक टन अनाज बरबाद हो चुका है। पिछले 4 सालों में अनाज, फल और सब्जियां जो उचित व्यवस्था न होने के कारण बरबाद हुए हैं, उनके मूल्यांकन किया जाए तो पता चलता है कि इस बरबाद फसल की कीमत 2,06,000 करोड़ रुपए रही है। हमारा किसान जितना पैदा करता है उसका लगभग चौथाई हिस्सा ही सरकार सुरक्षित रख पाती है और एक-तिहाई यानी लगभग 200 मिलियन टन अनाज कहां रखा जाए, इस सवाल के कारण हर साल 44 हजार करोड़ रुपए का अनाज सङ्कार फेंक दिया जाता है।

[चौबरी मुन्ब्रर सलीम]

महोदय, अगर बरबाव होने वाला अन्न दुनिया के बाजार में बेचकर किसानों और ग्रामों के विकास पर खर्च कर दिया जाए तो मेरा दावा है कि ग्रामवासियों का पलायन रुक सकता है, क्योंकि सुधायुक्त ग्राम ही आवाद रह सकते हैं। महोदय, सरकारों द्वारा लगातार शहरों और ग्राम के विकास पर खर्च का जो अंतर दिखाई दे रहा है, उससे गांवों और शहरों के बीच नफरत पैदा हो रही है, जो देश की एकता, अखंडता और विकास के लिए घातक दिखाई देती है।

मैं सरकार से पुरजोर मांग करता हूँ कि उद्योगपतियों की तरह किसानों को सस्ती बिजली दी जाए और सस्ती ब्याज दर पर लोन दिया जाए तथा बिजली, पानी, सड़कों, स्कूलों और अस्पतालों से युक्त ग्रामों को बनाया जाए। महोदय, मेरी इस व्याधा को अगर सरकार समझ जाए तो बापू द्वारा बोला गया वह जुमला सच हो जाएगा, जिसमें बापू ने कहा था कि गांव भगवान ने बनाए हैं और शहर इंसान ने। बन्धवाद।

॥ چودھری منور سلیم (अंत प्रदीप) : ऐ सिहा पति म्होदे, मैं पंडुस्तान की एस सब से त्रिये अबादी की दरदनक दास्तान की ओर एस म्हेल देन का देहियां अकर्षत करना जाइया भूव, जो अब्दी अन्धाता के नाम से जाती भै। वह क्षण भै जो एस त्रिये देहोप मैं क्षेत्र की मैं प्र कहें बुना भै, जैस देहोप मैं नक्ले भैर से अमेर लोगों के ज्वरे ज्वलन जाइकर्ते भैन, मैं एस क्षण का दर्द बिन करने के लिए आज एस म्हेल देन मैं कहें बुना भूव, जो क्लाइके की नेंद्र मैं पाति और कीजेर मैं कहें बु कर तम देश वासियों के लिए अन बिदा करता भै। हे ग्लोबों की स्फीरी याली क्षेत्री को स्फीरा करती भै, तब एस क्षण के विर्जेन्टे बोने ज्वरे प्र कम्क आ जाती भै। क्षण एस फसल से आस बांधेम लिया भै, लिक्न एस की ये एस सरकारों की भैरखी और नेत्रनदारी से थोट कर बकहर जाती भै। ऐ सिहा पति म्होदे, सरकारों का क्षणों से भैरखी का वालम भै जो के मिठा मैं अनी जानकारी के मताविक सरकार की भै सफ्टेना अप्सी अनी। का मानना भै के पैग्ले 5 क्षणों मैं 1,94,502 मिश्रक तन एनाज ब्रेड भू ज्का भै। ज्वेले 4 क्षणों मैं एनाज, पहल और सिर्जियां जू सचिव विष्टेना ने बोने की ओर से ब्रेड भूनी भैन, अन का मूलायकन किया जाये तो पैष ज्वला भै के एस ब्रेड फसल की विष्ट 2,06,000 क्रोर रुपये रही भै। ब्मारा क्षण ज्वता बिदा करना भै एस का लग बिग जोतेनां छसे भी सरकार सरकंत रक्हे पाति भै और एक त्वानी युनि 200 मैलें तन एनाज क्हार रक्हा जाये, एस सोल की कारन भू माल 44 ब्जार क्रोर रुपये का एनाज म्हाक्र पैग्लेक दिया जाता भै।

म्होदे, अगर ब्रेड भूने वाला अना देना के बाजार मैं बिज कर क्षणों और ग्रामों के वकास पर खर्च किया जाये तो मेरा दम्भी भै के ग्राम वासियों का प्लायन रक सका भै, कियों के सोदहा-प्लेट ग्रम की अबाद रह सकते भैन। म्होदे, सरकारों द्वारा लगातार शहरों और ग्रामों के

॥ [Transliteration in Urdu Script].

وکاں پر خرچ کا جو انتر دکھاتی دے رہا ہے، اس سے گاؤں اور شہروں کے بیچ نفرت پیدا ہو رہی ہے، جو دیش کی ایکتا، اکھٹتا اور وکاں کے لئے گھاٹک دکھاتی دیتی ہے۔ میں سرکار سے پرذور ملتگ کرتا ہوں کہ ادھیوگپتوں کی صرح گھانوں کو سستی بجلی دی جائے اور سئی بیزار در پر لون دیا جائے اور بجلی، پتنی، سڑکوں، اسکولوں اور اپنٹلوں سے پکٹ گراموں کو بنایا جائے۔

مہودے، میری اس وینتھا کو اگر سرکار سمجھہ جائے تو بلپر دوارا بولا گا وہ جملہ سچ ہو جائے گا، جس میں بلوچ نے کہا تھا کہ گاؤں بھگوان سے بنائے ہیں اور شہر انسان نے! دھنیواد
(ختم شد)

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Mr. Shantaram Naik.

SHRI SHANTARAM NAIK (Goa): I want to read it....(Interruptions)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Everybody is doing this....(Interruptions)... You mention the subject....(Interruptions)... I want to read this....(Interruptions)... This is a sensitive matter....(Interruptions)...

SHRI SHANTARAM NAIK: I am telling you the subject. The subject is that Portuguese Government is claiming some land in Goa....(Interruptions)... It is a serious matter....(Interruptions)... You do not allow me to read....(Interruptions)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You mention the subject and lay it on the Table....(Interruptions)...

SHRI SHANTARAM NAIK: But I telling you what the subject is....(Interruptions)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No problem. Once it is laid on the Table, it is in the public domain.

SHRI SHANTARAM NAIK: This is a sensitive matter. If there is any* in you, then you will allow me to speak.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That remark is expunged. You cannot judge my*. Mr K.C. Tyagi.

Demand to make changes in the land acquisition laws after consultation with farmers and discussion on the matter in the House

شروعی کامنی (ویہاڑ): مانا نئی یہ عرض سماپتی جی، میں آپکے ماقبل سے اس ویرोش علٹوچ کے دھارا بھارتی کیساں سے سائبھیت اک مہات्मی مुदھا لٹاٹا چاہتا ہوں।

*Expunged as ordered by Chair.